Vol. 3 | Issue : 06
www.shooliniuniversity.com
शुक्रवार, 30 अगस्त 2024
फॉलो करें

शूलिनी में मानों मेरे चाणक्यों के साथ एक परिवर्तनकारी यात्रा
पेज -02

शूलिनी यूनिवर्सिटी पत्रिका

'सशक्त शिक्षक छात्रों को अपना सर्वश्रेष्ठ अनुभव देते हैं'
पेज -03

स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया की प्रस्तुति

एडमिशन्स हेल्पलाइन
वर्षा चौहान 8352951037
कुलवंत कुमार 7807899750
रतिका कौंडल 7876905670

शिमला: विनम्रे कौशल 6239614060
हमीरपुर: मुकेश कौशल 8219898155
मंडी: लीला धर 7018994792 — दुकान नंबर 3,आर-संस फर्नीचर के विपरीत, अस्पताल रोड
जम्मू: विशाखा पंडिता 9906699495 — ऑफिस नं 77 पहली मंजिल एसपी स्मार्ट स्कूल के पास, जेके बैंक एटीएम के ऊपर, कच्ची छावनी
घुमारविन: मुकेश कौशल 8219898155 — चौहान परिसर, अपॉजिट सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ओल्ड बस स्टैंड, घुमारविन
बिलासपुर: काजल पठानिया 7807899731 — दुकान नंबर 16, द व्यास को. ओ सोसाइटी कॉम्प्लेक्स, अपॉजिट: बस स्टैंड

फोटो : हरमनप्रीत सिंह

इंडक्शन कार्यक्रम के साथ हुआ फ्रेशर्स का स्वागत

आहाना नाथ

शूलिनी यूनिवर्सिटी ने अपने नए छात्रों का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए तीन दिवसीय इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम न सिर्फ एक नए सफर की शुरुआत का उत्सव था, बल्कि छात्रों के समग्र विकास के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता का भी जीवंत उदाहरण था। इंडक्शन प्रोग्राम की शुरुआत कुलाधिपति प्रोफेसर पी.के. खोसला के व्यापक परिचय से हुई, जिसमें उन्होंने शूलिनी विश्वविद्यालय की बुनियादी मूल्यों को उजागर किया। उन्होंने अनुसंधान के महत्व को रेखांकित करते हुए नए छात्रों को शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

अलग सुविधाओं के बारे में भी दी जानकारी

इस कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, उन्होंने छात्रों को एक शपथ दिलाई, जिसमें उनसे नशीली पदार्थों से मुक्त और सकारात्मक स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने का आग्रह किया गया। इसके बाद उपाध्यक्ष डॉ. अवनी खोसला ने विश्वविद्यालय के डिजिटल टूल्स, विशेष रूप से डिजी कैंपस ऐप का परिचय दिया, जो उनके शैक्षणिक सफर में एक अहम भूमिका निभाएगा। उन्होंने छात्रों को कैंपस में उपलब्ध अलग अलग सुविधाओं के बारे में भी जानकारी दी।

दिन की गतिविधियों में एक नुक्कड़ नाटक भी शामिल था, जो रैगिंग-मुक्त वातावरण बनाए रखने के महत्व पर केंद्रित था, जिससे नए छात्रों में विश्वविद्यालय के मूल्यों का संचार हुआ। दिन का समापन एक उत्साहपूर्ण ज़ुम्बा डांस सत्र के साथ हुआ, जिसने वातावरण में ऊर्जा और उत्साह का संचार किया। इस सत्र ने छात्रों में जागरूकता की भावना को दर्शाया, और उनके आगामी शैक्षणिक सफर के लिए मंच तैयार किया। इंडक्शन के दूसरे दिन की शुरुआत छात्रों के लिए एक पुनर्जीवित योग और ध्यान सत्र के साथ हुई, जिसका आयोजन विश्वविद्यालय के इंडोर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में योग विभाग द्वारा किया गया।

मजेदार क्विज़ का आयोजन किया गया

इसके बाद मार्केटिंग टीम द्वारा एक मजेदार क्विज़ का आयोजन किया गया, जिसने छात्रों को आपस में जुड़ने और एक-दूसरे के साथ बातचीत करने में मदद की। ऑपरेशंस के निदेशक ब्रिगेडियर सुनील मेहता ने छात्रों को कैंपस का दौरा कराया, जिससे वे वहां उपलब्ध सुविधाओं और संसाधनों से परिचित हो सके। डॉ. पूजा वर्मा ने छात्रों को ड्यूल डिग्री प्रोग्राम के बारे में बताया, जिससे उन्हें अपनी मुख्य पढ़ाई के साथ-साथ एक अतिरिक्त ऑनलाइन डिग्री हासिल करने का अवसर मिलेगा।

मार्गदर्शन

दिन का समापन सामाजिक कल्याण निदेशक, पूनम नंदा द्वारा दी गई एक प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने आवश्यक जीवन कौशलों पर प्रकाश डाला और छात्रों को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए व्यावहारिक ज्ञान से लैस किया। नए स्नातकोत्तर छात्रों के लिए समान मार्गदर्शन और उनके फैकल्टी सदस्यों के साथ बातचीत का अवसर प्रदान करते हुए एक समानांतर इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन भी किया गया। इंडक्शन कार्यक्रम का समापन फ्रेशर्स के साथ उनके संबंधित शिक्षकों के साथ बातचीत के साथ हुआ।

देश की टॉप यूनिवर्सिटीज़ की लिस्ट में शूलिनी का दबदबा कायम

साहिल ठाकुर

शूलिनी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) के तहत केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा आंकी गई अपनी रैंकिंग में और सुधार करके अपनी सफलता की श्रृंखला को जारी रखा है।

लगातार चौथे वर्ष, शूलिनी ने देश के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में अपनी स्थिति बनाए रखी है। शूलिनी विश्वविद्यालय ने पिछले वर्ष देश भर के सभी विश्वविद्यालयों में 73वें स्थान से इस वर्ष 70वें स्थान पर अपनी रैंकिंग में सुधार किया है।

संपूर्ण रैंकिंग में, जिसमें आईआईटी और आईआईएम जैसे अन्य संस्थान शामिल हैं, विश्वविद्यालय को इस वर्ष 89वां स्थान दिया गया है, जो पिछले वर्ष की 101-150 श्रेणी के बैंड से ऊपर है।

विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग को 30वां स्थान, इंजीनियरिंग संकाय को 92वां स्थान, और प्रबंधन संकाय को 101-125 बैंड में रखा गया है। उल्लेखनीय है कि शूलिनी विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश का एकमात्र विश्वविद्यालय है जो शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों की सूची में शामिल है। संस्थापक और कुलाधिपति प्रोफेसर पी.के. खोसला ने बताया कि विश्वविद्यालय लगातार अपनी रैंकिंग में सुधार कर रहा है और पिछले छह वर्षों से शीर्ष 150 में बना हुआ है।

प्रो चांसलर विशाल आनंद ने इस उपलब्धि के लिए संकाय, कर्मचारियों और छात्रों को बधाई दी और कहा कि नवीनतम रैंकिंग 'विश्वस्तरीय शिक्षा और अनुसंधान की दिशा में हमारे निरंतर प्रयासों' को दर्शाती है।

कुलपति प्रोफेसर अतुल खोसला ने शूलिनी विश्वविद्यालय के लिए नवीनतम रैंकिंग को 'वास्तव में असाधारण' बताया और वादा किया कि विश्वविद्यालय उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना जारी रखेगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि ये रैंकिंग संकाय और छात्रों की इसे विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय बनाने के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

संपूर्ण रैंकिंग में, जिसमें आईआईटी और आईआईएम जैसे अन्य संस्थान शामिल हैं, विश्वविद्यालय को इस वर्ष 89वां स्थान दिया गया है।

शूलिनी और लिवरपूल यूनिवर्सिटी के बीच अहम समझौता

एसएनएल टीम

यूरोप में ऑनलाइन पोस्टग्रैजुएट डिग्री देने वाली अग्रणी प्रदाताओं में से एक ब्रिटेन की लिवरपूल यूनिवर्सिटी ने शूलिनी यूनिवर्सिटी के साथ एक एमओयू साइन किया है।

एमओयू पर लिवरपूल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर टिम जोन्स और शूलिनी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर अतुल खोसला ने हस्ताक्षर किए।

यह एमओयू वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान और सामग्री, संयुक्त अनुसंधान गतिविधियों, संकाय और प्रशासनिक कर्मचारियों के आदान-प्रदान, छात्रों के आदान-प्रदान और पारस्परिक हित की अन्य गतिविधियों के आदान-प्रदान के प्रावधान के लिए काफी अहम है।

वाइस चांसलर प्रोफेसर अतुल खोसला ने कहा कि समझौता यूनिवर्सिटी के छात्रों और कर्मचारियों को अवसर प्रदान करने में काफी मददगार साबित होगा। उन्होंने कहा कि एमओयू को मौजूदा शैक्षणिक वर्ष से ही लागू करने की कोशिश की जाएगी।

इस वक्त यूके में मौजूद प्रोफेसर खोसला ने कहा कि वह अनुसंधान, छात्रों और संकाय आदान-प्रदान के क्षेत्र में कुछ और संस्थानों के साथ सहयोग की खोज कर रहे हैं और एक ही डिग्री के लिए भारत और यूके में अध्ययन करने के इच्छुक छात्रों के लिए दोहरी डिग्री प्रदान कर रहे हैं।

शूलिनी में अत्याधुनिक फूड टेस्टिंग लैब का उद्घाटन

सुविधा

अंशुल चौहान

शूलिनी विश्वविद्यालय परिसर में एक अत्याधुनिक व्यावसायिक फूड टेस्टिंग लैब, शूलिनी लाइफसाइंसेज प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की गई है, जो रासायनिक और उन्नत उपकरण विश्लेषण के लिए आउटसोर्स्ड व्यावसायिक सेवाएं प्रदान करेगी और अनुमोदित मानकों का पालन करेगी।

नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फॉर कैलिब्रेशन लैबोरेट्रीज (एनएबीएल) द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय (एमओएफपीआई) द्वारा प्रायोजित यह सुविधा एक महत्वपूर्ण संसाधन बनने के लिए तैयार है।

शूलिनी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रोफेसर पी.के. खोसला और प्रो चांसलर विशाल आनंद ने आधिकारिक रूप से इस अत्याधुनिक माइक्रोबायोलॉजी प्रयोगशाला का उद्‍घाटन किया। इस कार्यक्रम में शूलिनी लाइफसाइंसेज के कार्यकारी निदेशक और सीओओ, आरएंडडी डीन, शैक्षणिक डीन, निदेशक और अन्य विश्वविद्यालय संकाय और कर्मचारी शामिल थे।

प्रोफेसर खोसला ने प्रयोगशाला की इस क्षेत्र में अपनी तरह की पहली प्रयोगशाला होने की विशेष स्थिति पर जोर दिया। उन्होंने जल्द ही एनएबीएल मान्यता प्राप्त करने की योजना की घोषणा की, जिससे प्रयोगशाला प्रमाणित मानकों के तहत सूक्ष्मजीव संदूषण के परीक्षण के लिए व्यावसायिक सेवाएं प्रदान कर सकेगी। यह सुविधा उच्च स्तरीय अनुसंधान का एक केंद्र भी बनेगी, जो विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं और आसपास के अन्य संस्थानों का समर्थन करेगी, और सूक्ष्मजीव विज्ञान परीक्षण में वैश्विक मानकों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करेगी।

यह लैब, एमओएफपीआई के अनुदान और शूलिनी विश्वविद्यालय फाउंडेशन के समर्थन से स्थापित की गई है, और इसमें लगभग 5 करोड़ रुपये का महत्वपूर्ण निवेश किया गया है। उन्नत तकनीक और अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित, यह लैब माइक्रोबियल विज्ञान में अग्रणी अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए तैयार है, जो अकादमिक और औद्योगिक दोनों आवश्यकताओं को पूरा करेगी। प्रो चांसलर विशाल आनंद ने हिमाचल प्रदेश में लाइफ साइंसेज के भविष्य पर इस प्रयोगशाला के परिवर्तनकारी प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह सुविधा 'वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाने और हमारे शोधकर्ताओं और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को विश्वस्तरीय संसाधन प्रदान करने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित करती है।'

सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करने से जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम होती है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन और वायु प्रदूषण कम होता है

शूलिनी के शोधकर्ताओं का कमाल, सोलर पैनलों के लिए नई कूलिंग तकनीक की विकसित

शूलिनी से विचार

अहाना नाथ

सौर ऊर्जा वैश्विक स्तर पर कम कार्बन अर्थव्यवस्था की दिशा में परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जो एक उज्जवल, अधिक टिकाऊ भविष्य की आशा प्रदान करती है। यह स्वच्छ, टिकाऊ और नवीकरणीय ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो जलवायु परिवर्तन को कम करने और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण समाधान प्रदान करता है। सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करने से जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम होती है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन और वायु प्रदूषण कम होता है।

शूलिनी विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने सौर ऊर्जा संयंत्रों की दक्षता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाने के लिए एक नई विधि विकसित की है। शूलिनी विश्वविद्यालय के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन एनर्जी साइंस एंड टेक्नोलॉजी के फोटोवोल्टैक्स रिसर्च ग्रुप के तहत किए गए शोध का मुख्य फोकस सोलर पैनलों को ठंडा रखने के लिए थर्मोइलेक्ट्रिक कूलर्स (टीईसीएस) का उपयोग करना है, जिससे कुल ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि होती है। सोलर पैनल अक्सर अत्यधिक गर्म होने पर अपनी दक्षता खो देते हैं, जो विशेष रूप से बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा प्रतिष्ठानों के लिए एक आम समस्या है, खासकर अत्यधिक जलवायु परिस्थितियों में। आमतौर पर इस समस्या को हल करने के लिए एयर या वाटर कूलिंग तकनीकों का उपयोग किया जाता है, लेकिन इन विधियों की कुछ सीमाएँ होती हैं। शूलिनी विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने इस समस्या का एक वैकल्पिक समाधान खोजने के लिए टीईसीएस (थर्मोइलेक्ट्रिक कूलर्स) का उपयोग किया, जो ठोस अवस्था के उपकरण हैं और सोलर पैनलों के तापमान को सटीक रूप से नियंत्रित कर सकते हैं, जिससे अतिरिक्त ऊर्जा को बिजली में परिवर्तित किया जा सकता है।

शिमला में किए गए अपने अध्ययन में, शोधकर्ताओं डॉ. राहुल चंदेल और डॉ. श्याम सिंह चंदेल ने दो छोटे पॉलीक्रिस्टलाइन सिलिकॉन सोलर पैनलों के साथ प्रयोग किया। एक पैनल को थर्मोइलेक्ट्रिक कूलर और वाटर कूलिंग सिस्टम से लैस किया गया, जबकि दूसरे को बिना किसी कूलिंग के रखा गया। परिणाम महत्वपूर्ण थे क्योंकि ठंडा किए गए पैनल ने लगभग 25°C का स्थिर तापमान बनाए रखा, जबकि थर्मोइलेक्ट्रिक कूलर के बिना अन्य पैनल का तापमान 63°C तक पहुंच गया। यह 30-38°C का अंतर स्पष्ट रूप से दिखाता है कि टीईसीएस सोलर पैनलों को अत्यधिक गर्म होने से प्रभावी ढंग से रोक सकते हैं, जिससे दक्षता में सुधार होता है और त्वरित मेकेनिज्म प्राप्त होता है। इस नई नवाचार के प्रभाव महत्वपूर्ण हैं। यह उच्च मात्रा में कार्बन उत्सर्जन (सीएफसीएस) जैसी समस्याओं को हल कर सकता है, जिन्हें क्लोरोफ्लोरोकार्बन के रूप में भी जाना जाता है और जो कैंसर, श्वसन रोग और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की नारकोसिस जैसी कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकते हैं।

01 | एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जो एक उज्जवल, अधिक टिकाऊ भविष्य की आशा प्रदान करती है।

02 | समय के साथ कम पैनल बदले जाएंगे और सौर ऊर्जा की बर्बादी कम होगी।

यह टिकाऊ तकनीक थर्मल स्ट्रेस को कम करके पीवी मॉड्यूल्स की आयु को बढ़ा सकती है, जिसका मतलब है कि समय के साथ कम पैनल बदले जाएंगे और सौर ऊर्जा की बर्बादी कम होगी। यह तकनीक उन क्षेत्रों में भी अधिक व्यवहार्य विकल्प बन जाएगी जहां पारंपरिक पीवी मॉड्यूल्स संघर्ष करते हैं, विशेष रूप से अत्यधिक गर्म क्षेत्रों में। यह दूरदराज और अविकसित क्षेत्रों में बिजली लाने में मदद कर सकता है, जिससे वहां स्वच्छ ऊर्जा की पहुंच में सुधार होगा। टीईसी के माध्यम से पीवी मॉड्यूल्स में लागत में कमी और आर्थिक विकास महत्वपूर्ण कारक होंगे। यह तकनीक वैश्विक स्थिरता लक्ष्यों का समर्थन करती है, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (सीडीजीएस) से संबंधित, जैसे कि सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा (सीडीजी 7) और जलवायु कार्रवाई (सीडीजी 13)। शूलिनी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अतुल खोसला ने डॉ. एस.एस. चंदेल और डॉ. राहुल चंदेल को सौर ऊर्जा पर उनके असाधारण कार्य के लिए बधाई दी, जिसे सबसे प्रतिष्ठित पीवी पत्रिका में प्रकाशित किया गया है। उन्होंने कहा, 'यह कार्य दुनिया में सौर ऊर्जा उत्पादन के तरीके को बदल सकता है।'

शिक्षक किसी भी स्कूल के लिए सबसे मूल्यवान संसाधन होते हैं

'सशक्त शिक्षक छात्रों को अपना सर्वश्रेष्ठ अनुभव देते हैं'

इंटरव्यू

मेघना ठाकुर

सुश्री रोहिणी आइमा जम्मू संस्कृति स्कूल, जम्मू की प्रिंसिपल सह उपाध्यक्ष हैं। वह एमएससी, एमईडी हैं, उनके पास बिजनेस मैनेजमेंट में डिप्लोमा है और शिक्षा क्षेत्र में 38 वर्षों से अधिक का अनुभव है। हमने उनसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर बात की। यहाँ साक्षात्कार के कुछ अंश दिए गए हैं।

Q. कृपया हमें अपनी शैक्षणिक यात्रा और अपने स्कूल के बारे में बताएँ?

मेरी शैक्षणिक यात्रा बहुत संतुष्टिदायक रही है। शिक्षा क्षेत्र में 38 वर्षों से अधिक समय तक अध्यापन के क्षेत्र में मेरे करियर ने मुझे कई प्रतिष्ठित कार्य करने का सौभाग्य प्रदान किया है, जिसने शिक्षा के प्रति मेरी समझ और दृष्टिकोण को आकार दिया है। वर्तमान में, मैं जम्मू संस्कृति स्कूल, जम्मू की संस्थापक प्रिंसिपल और उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करती हूँ। यह स्कूल अनुभवात्मक शिक्षण और नवीन प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए मेरे दृष्टिकोण को मूर्त रूप देता है। हमारा मिशन बच्चों और स्थानीय समुदायों को पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक जिम्मेदारी के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना है, साथ ही जम्मू और कश्मीर की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करना है। नेतृत्व का अर्थ है जवाबदेही के साथ सामूहिक कार्रवाई को प्रेरित करना और सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित करने के लिए प्रणालीगत परिवर्तन के लिए प्रयास करना। इसमें एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना शामिल है, जहाँ सम्मान और समानता मौलिक हैं।

Q. आपको लगता है कि शिक्षा और सीखने के मामले में आज की पीढ़ी कितनी विशेषाधिकार प्राप्त है?

आज की पीढ़ी शिक्षा और सीखने के मामले में वास्तव में विशेषाधिकार प्राप्त है, खासकर पिछली पीढ़ियों की तुलना में। प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण उनके पास अपनी उंगलियों पर ढेर सारी जानकारी और संसाधन उपलब्ध हैं। यह पहुँच व्यक्तिगत सीखने के अनुभव की अनुमति देती है जो अतीत में अकल्पनीय थे। हालाँकि, इन विशेषाधिकारों के साथ इन संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग करने और समाज और पर्यावरण पर उनके सीखने के प्रभाव के बारे में जागरूक होने की ज़िम्मेदारियाँ भी आती हैं।

Q. आप अपने स्कूल में छात्रों की मानसिक भलाई कैसे सुनिश्चित करते हैं?

01 | आज की पीढ़ी शिक्षा और सीखने के मामले में वास्तव में विशेषाधिकार प्राप्त है। प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण उनके पास अपनी उंगलियों पर ढेर सारी जानकारी और संसाधन उपलब्ध हैं।

02 | हम शिक्षा में समानता, समावेशिता और पहुँच सुनिश्चित करने के लिए लगातार रणनीतियों और प्रथाओं का पता लगाते हैं।

जम्मू संस्कृति स्कूल में, हम अपने छात्रों की मानसिक भलाई को उनकी शैक्षणिक सफलता के समान ही प्राथमिकता देते हैं। हमने अपने मुख्य फ़ोकस के हिस्से के रूप में सहकर्मी शिक्षक कार्यक्रम, करियर परामर्श और विशेष आवश्यकता शिक्षा को लागू किया है। हमारा दृष्टिकोण एक सहायक और समावेशी वातावरण बनाना है, जहाँ हर छात्र मूल्यवान और समझा हुआ महसूस करे। हम विभिन्न कार्यशालाओं और पहलों के माध्यम से अपने पाठ्यक्रम में मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को एकीकृत करके एक संतुलित जीवन शैली के महत्व पर भी जोर देते हैं। प्रत्येक वर्ष, हम अपने गतिविधि योजनाकार के हिस्से के रूप में एक स्वास्थ्य और कल्याण कैलेंडर विकसित करते हैं और इस कार्यक्रम के अनुसार सत्र और गतिविधियाँ आयोजित करते हैं। हम शिक्षा में समानता, समावेशिता और पहुँच सुनिश्चित करने के लिए लगातार रणनीतियों और प्रथाओं का पता लगाते हैं।

Q. आपको लगता है कि अकादमिक सीखने के साथ-साथ खेल कितने महत्वपूर्ण हैं?

खेल छात्रों के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। अकादमिक सीखने के साथ-साथ, खेल टीम वर्क, अनुशासन और लचीलापन जैसे आवश्यक जीवन कौशल सिखाते हैं। हमारे स्कूल में, हम छात्रों को विभिन्न खेल गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, यह समझते हुए कि शारीरिक शिक्षा उनके समग्र विकास का अभिन्न अंग है। एक स्वस्थ शरीर एक स्वस्थ दिमाग का समर्थन करता है, और खेल छात्रों को इन गुणों को विकसित करने के लिए सही मंच प्रदान करते हैं, जो बदले में उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और व्यक्तिगत विकास को बढ़ाता है। जब वे खेल में भाग लेते हैं तो छात्र अधिक प्रोत्साहित और व्यस्त महसूस करते हैं, जिससे उनके हाथ में मौजूद कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की उनकी क्षमता बढ़ जाती है। आजकल, जब बच्चे खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं, तो वे अक्सर खेलों को करियर के रूप में अपनाने में रुचि रखते हैं।

Q. छात्रों और कर्मचारियों दोनों के लिए एक सहायक शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करने के लिए आप किन रणनीतियों का उपयोग करते हैं?

शिक्षक किसी भी स्कूल के लिए सबसे मूल्यवान संसाधन होते हैं। मैं उनकी व्यावसायिक दक्षताओं को उन्नत करने, उनके काम को मान्यता देने और उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें पुरस्कृत करने के लिए विभिन्न अवसर प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने में विश्वास करता हूँ। जब शिक्षकों को सशक्त बनाया जाता है, तो वे छात्रों को अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं और बेहतर सीखने के अवसरों की ओर छात्रों को आकर्षित करने और प्रोत्साहित करने के लिए सुविधाकर्ता की भूमिका निभाते हैं। सभी स्तरों पर स्पष्ट संचार कौशल स्कूल में सकारात्मक माहौल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

Q. आप वर्तमान शिक्षा प्रणाली से कितने संतुष्ट हैं?

एनईपी-2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षा नीति है, और मुझे उम्मीद है कि स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों में इसके उचित कार्यान्वयन से हमारे छात्रों के लिए सीखने के परिणामों में सुधार होगा। इससे शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ेगी और सभी के लाभ के लिए वैश्विक दृष्टिकोण व्यापक होंगे।

Q. अंत में, आप छात्रों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

प्रिय छात्रों, खुद बनना सीखें और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपने सामने आने वाले किसी भी बदलाव या चुनौती के अनुकूल बनें। हर चीज़ को बहुमुखी मानसिकता के साथ अपनाएँ, क्योंकि मेरा मानना है कि इससे आपको दुनिया में आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। हर छात्र अद्वितीय है, उसकी अपनी क्षमताएँ और योग्यताएँ हैं। इन्हें पहचानें।

आध्यात्मिक रिट्रीट ने भक्तों को तरोताजा कर दिया

नीरज शर्मा

योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया (वाईएसएस) ने शूलिनी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय आध्यात्मिक रिट्रीट का आयोजन किया, जिसका समापन एक अत्यंत पवित्र क्रिया दीक्षा समारोह के साथ हुआ, जिसमें देश भर से लगभग 200 भक्तों ने भाग लिया।

स्वामी कृष्णानंद गिरि, स्वामी आलोकानंद गिरि और ब्रह्मचारी हरिप्रियानंद के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम ने उपस्थित लोगों को तरोताजा और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध महसूस कराया।

स्वामी कृष्णानंद गिरि ने अंतिम दिन प्रार्थना और ध्यान का नेतृत्व किया, जिससे एक पवित्र और उत्थानशील वातावरण बना। आध्यात्मिक तरंगों से ओतप्रोत रिट्रीट में भजन और प्रार्थनाएँ शामिल थीं, जो पूरे परिसर में गूंजती रहीं। क्रिया योग में पहले से ही दीक्षित भक्तों ने परिवर्तनकारी अनुभव के लिए गहरा आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम ने 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए योगी' के लेखक और वाईएसएस के संस्थापक श्री परमहंस योगानंद की शिक्षाओं से प्रेरणा ली। प्रतिभागियों ने शूलिनी विश्वविद्यालय के शांत वातावरण और प्रदान की गई उत्कृष्ट सुविधाओं की प्रशंसा की। वाईएसएस के एक भक्त और लंबे समय से सहयोगी चांसलर प्रो. पीके खोसला ने इस अवसर पर कहा, 'भक्तों के समर्पण और आध्यात्मिक प्रतिबद्धता को देखकर खुशी होती है। श्री परमहंस योगानंद की शिक्षाएं हम सभी को प्रेरित करती रहती हैं और शूलिनी विश्वविद्यालय में इस तरह के पवित्र कार्यक्रम की मेजबानी करना सौभाग्य की बात है।

यह रिट्रीट एक उच्च स्तर पर संपन्न हुआ, जिसमें उपस्थित लोगों ने आध्यात्मिक रूप से संतोष महसूस किया और स्वामी कृष्णानंद गिरि और अन्य भिक्षुओं के मार्गदर्शन के लिए आभारी रहे।

'स्प्रिंगर के साथ अकादमिक प्रकाशन' पर ज्ञानवर्धक चर्चा आयोजित की गई

एसएनएल टीम, शोधकर्ताओं और विद्वानों को सशक्त बनाने के लिए, शूलिनी विश्वविद्यालय ने 'स्प्रिंगर के साथ अकादमिक प्रकाशन' शीर्षक से एक ज्ञानवर्धक सत्र आयोजित किया। इस कार्यक्रम में स्प्रिंगर नेचर ग्रुप, नई दिल्ली की वरिष्ठ संपादक (पुस्तकें) सतविंदर कौर ने अकादमिक प्रकाशन के बारे में अपना व्यापक ज्ञान साझा किया। एक दशक से अधिक के अनुभव के साथ, सतविंदर कौर ने अकादमिक जगत में शोध प्रकाशनों की महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने शोध कार्य का मूल्यांकन करते समय और प्रकाशन के लिए इसकी उपयुक्तता तय करते समय प्रकाशकों द्वारा विचार किए जाने वाले प्रमुख कारकों को रेखांकित किया। कौर ने बताया कि 'परिणाम' और 'चर्चा' अनुभाग अक्सर शोध लेख के सबसे अधिक जांचे जाने वाले भाग होते हैं। उन्होंने यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया कि शोध निष्कर्ष क्षेत्र के लिए प्रासंगिक हो और कोई भी खोज या अंतर्दृष्टि प्रकाशन के योग्य होने के लिए पर्याप्त हो।

शूलिनी में मानों मेरे चाणक्यों के साथ एक परिवर्तनकारी यात्रा

शुभ राणा*

यादों में

चार साल पहले, यह लड़की जो अब गर्व से ज़मीन से रिपोर्टिंग करती है, पूरे देश की कहानियों को कवर करती है, कारगिल से लेकर एलएसी तेजस की मातृभूमि सुलूर तक, उसे यकीन नहीं था कि वह मीडिया उद्योग में कैसे प्रवेश करेगी। दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट थी, लेकिन रास्ता अनिश्चित था।

मैंने 2020 में बीजेएमसी कोर्स के लिए शूलिनी विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। हालाँकि मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के लिए भी चयनित हुई थी, लेकिन मुझे लगा कि शूलिनी मेरे लिए बनी है, और मेरा विश्वास करो जब लोग कहते हैं कि भगवान के पास हमेशा आपके लिए बेहतर योजना होती है। वे पूरी तरह से सही हैं।

हरियाणा से आने के कारण, मैं दुनिया को एक्सप्लोर करना और नई चीजें सीखना चाहती थी। मैं स्कूल के दिनों में भाषण, वाद-विवाद और समूह चर्चा में राष्ट्रीय और राज्य स्तर की विजेता रही। मुझे अपनी भावनाओं को व्यक्त करना पसंद है, और दूसरों की मदद करने से मुझे हमेशा ऊर्जा मिलती है। मुझे फ़िल्में देखना बहुत पसंद है, और थ्री इडियट्स में एक संवाद है जो हमेशा मेरे दिल में बसा रहता है: ₹सफलता के पीछे मत भागो; उत्कृष्टता का पीछा करो, और सफलता अप्रत्याशित रूप से तुम्हारे पास आएगी।₹ मेरे पास एक स्पष्टता थी जिसे मैं दुनिया के साथ साझा करना चाहती थी और समाज के लिए रिपोर्ट करना चाहती थी। इसलिए, मैंने पत्रकारिता को चुना। जैसा कि अल्बर्ट आइंस्टीन ने बहुत अच्छी तरह से कहा था, ₹सफल व्यक्ति बनने की कोशिश मत करो, बल्कि मूल्यवान व्यक्ति बनने की कोशिश करो।₹ यह मेरे प्रोफेसरों, शूलिनी विश्वविद्यालय में मेरे चाणक्य की शिक्षाओं से मेल खाता था, जिन्होंने मुझे मीडिया की एबीसीडी सिखाई थी। शूलिनी में पहले दिन से लेकर एबीपी न्यूज़ में इंटर्नशिप करने और फिर इंडिया न्यूज़ में न्यूज़ कॉरेस्पोंडेंट के रूप में नौकरी हासिल करने तक। यह वास्तव में एक परिवर्तनकारी यात्रा थी और मेरे पत्रकारिता करियर में मेरा पहला कदम था। मुझे सर्वश्रेष्ठ प्रोफेसरों से सीखने का सौभाग्य मिला, मेरे विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विपिन पब्बी जीवन भर के लिए एक असाधारण गुरु हैं। वह प्रत्येक छात्र के सफलता के ग्राफ पर नज़र रखते हैं, कवर करने के लिए कहानियाँ देते हैं, और हमें हमारी खामियों और उन्हें सुधारने के तरीके के बारे में बताते हैं। उनकी करेंट अफेयर्स की कक्षाएं न केवल जानकारीपूर्ण हैं, बल्कि व्यावहारिक भी हैं, क्योंकि वे आपकी आलोचनात्मक सोच कौशल को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएंगी। प्रोफेसर पार्थ शर्मा बोलने की कला सिखाने के लिए हैं। उन्होंने मुझे उच्चारण की कला और अपनी सामग्री में दृढ़ विश्वास के साथ बोलना सिखाया। मैम निशा कपूर, रंजना ठाकुर और इंदु नेगी ने मुझे प्यार और देखभाल के साथ पढ़ाया। वे परिसर में माता-पिता की तरह थे। एबीपी न्यूज़ में इंटर्नशिप के बाद, मुझे इंडिया न्यूज़ के लिए न्यूज़ रिपोर्टर के रूप में काम करने का मौका मिला। अब एक साल हो गया है, और जब मैं आउटडोर शूट के लिए जाती हूं, जैसे कारगिल की धरती से कारगिल विजय दिवस को कवर करना, सुलूर में भारतीय वायुसेना के सबसे बड़े बहुराष्ट्रीय अभ्यास तरंग शक्ति को कवर करना, महिला दिवस के लिए विशेष शूट करना, या विरोध प्रदर्शनों को कवर करना, मैं हमेशा अपने प्रोफेसरों द्वारा मुझमें डाले गए मूल्यों को याद रखना। मुझे अभी लंबा सफर तय करना है, लेकिन हां, मुझे गर्व है कि जिस रास्ते पर मैं आत्मविश्वास से चल रही हूं, वह शूलिनी यूनिवर्सिटी में मेरे गुरुओं द्वारा बनाया गया है।

कार्यबल प्रशिक्षण व विकास का भविष्य

गेस्ट कॉलम

डॉ. सुनील कुमार*

वर्चुअल लर्निंग

ई-प्रशिक्षण, जिसे अक्सर इलेक्ट्रॉनिक प्रशिक्षण के रूप में जाना जाता है, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से शिक्षण कार्यक्रम देने का अभ्यास है।

डिजिटल युग ने कंपनियों के कार्यबल प्रशिक्षण और विकास के तरीके में क्रांति ला दी है। वे दिन गए जब कर्मचारियों को कक्षा-शैली के प्रशिक्षण में घंटों बैठना पड़ता था। आज, ई-प्रशिक्षण और वर्चुअल रियलिटी (वीआर) गेम चेंजर के रूप में उभरे हैं, जो विभिन्न उद्योगों में संगठनों के अपने कर्मचारियों को भविष्य के लिए तैयार करने के तरीके को बदल रहे हैं। जैसे-जैसे व्यवसाय तेजी से बदलती दुनिया के अनुकूल होते हैं, ये तकनीकें बदलती मांगों को पूरा करने के लिए आवश्यक लचीलापन, सुविधा और लागत-दक्षता प्रदान करती हैं।

ई-प्रशिक्षण, जिसे अक्सर इलेक्ट्रॉनिक प्रशिक्षण के रूप में जाना जाता है, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से शिक्षण कार्यक्रम देने का अभ्यास है। यह देखना मुश्किल नहीं है कि इसे इतनी व्यापक लोकप्रियता क्यों मिली है। इसके मूल में, ई-प्रशिक्षण कर्मचारियों को भूगोल और समय क्षेत्रों की बाधाओं को दूर करते हुए किसी भी समय कहीं से भी शिक्षण सामग्री तक पहुँचने की क्षमता प्रदान करता है। यह लचीलापन दूरस्थ टीमों या भौगोलिक रूप से फैले हुए कार्यबल वाले संगठनों के लिए आवश्यक है।

इसकी सुविधा के अलावा, ई-प्रशिक्षण लागत-प्रभावी भी है। पारंपरिक व्यक्तिगत प्रशिक्षण सत्रों में स्थानों की बुकिंग से लेकर मुद्रण सामग्री और यात्रा की व्यवस्था तक, रसद में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है। ई-प्रशिक्षण इनमें से कई खर्चों को समाप्त करता है, जिससे कंपनियों को संसाधनों को अधिक कुशलता से आवंटित करने की अनुमति मिलती है। इसके अलावा, जैसे-जैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म आगे बढ़ रहे हैं, ऑनलाइन प्रशिक्षण सामग्री की गुणवत्ता - वीडियो ट्यूटोरियल से लेकर इंटरैक्टिव सिमुलेशन तक - में काफी सुधार हुआ है। ये सामग्रियाँ अक्सर स्व-गति वाली होती हैं, जिससे शिक्षार्थी अपनी गति से सामग्री से जुड़ सकते हैं, जिससे ज्ञान प्रतिधारण और अनुप्रयोग में वृद्धि होती है। हालाँकि, यह केवल पहुँच और लागत-दक्षता के बारे में नहीं है। ई-प्रशिक्षण प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से दी जाने वाली सामग्री इसकी प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई सामग्री जो स्पष्ट, व्यापक और लक्ष्य-उन्मुख है, जुड़ाव को बढ़ावा देती है और समग्र शिक्षण अनुभव को बेहतर बनाती है। किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम की तरह, सामग्री को शिक्षार्थियों के साथ प्रतिध्वनित होना चाहिए। प्रशिक्षण कार्यक्रम जो विभिन्न शिक्षण शैलियों या उद्योग-विशिष्ट आवश्यकताओं पर विचार करने में विफल रहते हैं, कर्मचारियों को उनके लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करने में सफल होने की संभावना कम होती है। सामग्री से परे, ई-प्रशिक्षण देने का तरीका भी मायने रखता है। आधुनिक प्रशिक्षण प्लेटफ़ॉर्म वेबिनार, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और मोबाइल एप्लिकेशन सहित कई तरह के वितरण तरीके प्रदान करते हैं। यह बहुमुखी प्रतिभा कंपनियों को अपने कर्मचारियों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण अनुभव को तैयार करने की अनुमति देती है। उदाहरण के लिए, जबकि एक टीम लाइव इंटरैक्शन के साथ वर्चुअल क्लासरूम सेटिंग से लाभान्वित हो सकती है, वहीं दूसरी टीम ऑन-डिमांड वीडियो सामग्री को पसंद कर सकती है जिसे उनकी सुविधानुसार एक्सेस किया जा सकता है। बेशक, कोई भी प्रशिक्षण कार्यक्रम उचित आकलन और मूल्यांकन के बिना पूरा नहीं होता है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म इस क्षेत्र में वास्तविक समय की प्रतिक्रिया देकर और क्विज़, टेस्ट और प्रदर्शन मेट्रिक्स के माध्यम से प्रगति को ट्रैक करके उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं। ई-प्रशिक्षण की दुनिया में सबसे रोमांचक विकासों में से एक वर्चुअल रियलिटी का एकीकरण है। VR एक ऐसा इमर्सिव लर्निंग अनुभव प्रदान करता है जो पारंपरिक तरीकों से परे है। कल्पना करें कि आप एक जटिल तकनीकी कौशल का अभ्यास करने में सक्षम हैं या पूरी तरह से नकली वातावरण में आपातकालीन परिदृश्य का जवाब दे सकते हैं जो वास्तविक दुनिया की स्थितियों की नकल करता है। वीआर के साथ, यह न केवल संभव है बल्कि उन उद्योगों में तेजी से आम हो रहा है जहां व्यावहारिक प्रशिक्षण आवश्यक है। शिक्षार्थियों को इन नकली परिदृश्यों में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनुमति देकर, वीआर जुड़ाव और अवधारण दोनों को बढ़ाता है। कर्मचारी वास्तविक दुनिया के प्रशिक्षण के साथ आने वाले जोखिमों के बिना एक सुरक्षित, नियंत्रित वातावरण में अपने कौशल को निखार सकते हैं। प्रशिक्षण में VR के लाभ कई हैं। यह एक ऐसा स्तर प्रदान करता है जो मानक ई-प्रशिक्षण विधियों के माध्यम से आसानी से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। जब शिक्षार्थी अपनी प्रशिक्षण सामग्री के साथ शारीरिक रूप से बातचीत कर सकते हैं, तो उनके जुड़े रहने की संभावना अधिक होती है, चाहे वे वर्चुअल मशीन पर नेविगेट कर रहे हों, सुरक्षा अभ्यास कर रहे हों, या ग्राहक सेवा परिदृश्यों का अभ्यास कर रहे हों। विसर्जन का यह स्तर मजबूत स्मृति प्रतिधारण बनाने में मदद करता है और कर्मचारियों को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के लिए बेहतर ढंग से तैयार करता है।

जबकि ई-प्रशिक्षण और वीआर अविश्वसनीय लाभ प्रदान करते हैं, ऐसी चुनौतियाँ भी हैं जिन पर कंपनियों को विचार करना चाहिए। एक के लिए, वीआर तकनीक के लिए अग्रिम लागत और विशेष उपकरणों की आवश्यकता कुछ संगठनों के लिए निषेधात्मक हो सकती है। इसके अतिरिक्त, सभी शिक्षार्थी वीआर के साथ सहज नहीं होते हैं, और कुछ को लंबे सत्रों के दौरान मोशन सिकनेस या थकान का अनुभव हो सकता है। इन उपकरणों की प्रभावशीलता को अधिकतम करने के लिए, कंपनियों को न केवल तकनीक में निवेश करना चाहिए, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका कार्यबल इसका उपयोग करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार हो।

इसके अलावा, ई-प्रशिक्षण की सफलता काफी हद तक कर्मचारियों की प्रेरणा और आत्म-अनुशासन पर निर्भर करती है। प्रशिक्षक की भौतिक उपस्थिति या कक्षा की संरचना के बिना, कुछ शिक्षार्थियों को ट्रैक पर बने रहना मुश्किल हो सकता है। यही कारण है कि आकर्षक और संवादात्मक तत्वों के साथ अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई सामग्री ई-प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

इन चुनौतियों के बावजूद, ई-प्रशिक्षण और आभासी वास्तविकता के लाभ निर्विवाद हैं। वे कार्यबल विकास के भविष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो आधुनिक कर्मचारी की ज़रूरतों को पूरा करने वाले अभिनव और लचीले समाधान प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे तकनीक आगे बढ़ती रहेगी, ये प्रशिक्षण विधियाँ संगठनात्मक सफलता के लिए और भी अधिक अभिन्न हो जाएँगी। चाहे सुलभ ई-प्रशिक्षण प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से हो या इमर्सिव वीआर सिमुलेशन के माध्यम से, सीखने का भविष्य डिजिटल है - और यह पहले से ही हमारे काम करने के तरीके को बदल रहा है।

***(लेखक प्रबंधन विज्ञान संकाय में एसोसिएट प्रोफेसर हैं)**

SILB | Shoolini Institute of Life Sciences & Business Management

APPROVED BY AICTE
AFFILIATED TO HIMACHAL PRADESH UNIVERSITY, SHIMLA
NAAC ACCREDITED 'A' GRADE

WE BELIEVE IN EXCELLENCE

20 GOLD MEDALLISTS

250+ MERIT POSITIONS

COURSES OFFERED
BBA
BCA
BSc(Hons)
Biotechnology
Microbiology
MSc
Botany | Chemistry | Biotech | Microbiology

ADMISSIONS OPEN 2024

98161-44405, 98161-44406

SILB, The Mall Solan | www.silb.org

विप्रो और यूनिसेफ जैसे संस्थानों में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं

'देश में मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की मांग बढ़ रही है'

आमने सामने

नीरज शर्मा

डॉ. एस. एम. हैदर रिज़वी ने हाल ही में शूलिनी विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान और व्यवहार विज्ञान केंद्र (CPBS) के प्रोफेसर और प्रमुख की भूमिका संभाली है। 20 वर्षों से अधिक के शानदार करियर के साथ, डॉ. रिज़वी इस पद पर व्यापक विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि लेकर आए हैं। यहाँ एक साक्षात्कार के अंश दिए गए हैं :

01 | पेशेवर विकास के अवसरों की तलाश करना और काम करने के नए तरीकों के लिए खुला रहना।

02 | तेजी से तकनीकी प्रगति और बदलती बाजार मांगों के कारण दुनिया पहले से कहीं अधिक गतिशील है।

Q. क्या आप शूलिनी विश्वविद्यालय में अपनी नियुक्ति से पहले अपनी पेशेवर पृष्ठभूमि के बारे में विस्तार से बता सकते हैं?

मेरे पास 22 वर्षों से अधिक का पेशेवर अनुभव है, जिसमें मैंने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों, विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों के साथ सहयोग किया है। मेरे करियर ने मुझे शिक्षा जगत को उद्योग जगत से जोड़ने में सक्षम बनाया है, जिसमें विप्रो और यूनिसेफ जैसे संस्थानों में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं। इस विविध अनुभव ने मुझे मनोविज्ञान के भीतर चुनौतियों और संभावनाओं की गहन समझ प्रदान की है।

Q. क्या आप कृपया अपनी शैक्षिक यात्रा के बारे में विवरण साझा करेंगे? क्या मनोविज्ञान में करियर हमेशा से आपकी आकांक्षा थी?

मैं उत्तर प्रदेश से हूँ और मैंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों ही पढ़ाई पूरी की है। इसके बाद, मैंने दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) से पीएच डी की उपाधि प्राप्त की, उसके बाद यूनाइटेड किंगडम में शेफर्ड विश्वविद्यालय से पोस्टडॉक्टरल फेलोशिप प्राप्त की। मनोविज्ञान हमेशा से मेरे लिए बहुत रुचि का विषय रहा है, और मैंने हमेशा इसे आगे बढ़ाने का इरादा किया है। यह एक पुरस्कृत करने वाला मार्ग रहा है, और मुझे खुशी है कि मैंने अपने जीवन में यह निर्णय जल्दी ही ले लिया।

Q. आपकी राय में, एक मनोवैज्ञानिक के लिए कौन से कौशल होना ज़रूरी है?

एक मनोवैज्ञानिक को काफी धैर्य दिखाना चाहिए और एक असाधारण श्रोता होना चाहिए। सहानुभूतिपूर्ण, दयालु और लचीला होना आवश्यक है, साथ ही दबाव में प्रभावी ढंग से काम करने में सक्षम होना चाहिए। ये गुण मानव व्यवहार को कुशलता से समझने और प्रबंधित करने में मौलिक हैं।

Q. मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों की बढ़ती मान्यता को देखते हुए, मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्तमान में भारत में कौन से रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं?

ऐतिहासिक रूप से, भारत में मनोविज्ञान के क्षेत्र की मांग पश्चिमी देशों की तुलना में कम रही है। हालाँकि, COVID-19 महामारी के बाद एक उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की मांग में वृद्धि हुई है, जिससे शैक्षणिक संस्थानों, कॉर्पोरेट वातावरण और भर्ती एजेंसियों में परामर्शदाताओं के लिए अवसर बढ़ रहे हैं। भारत में मनोविज्ञान का परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, जो कई तरह के अवसर प्रदान करता है जो अब वैश्विक स्तर पर पाए जाने वाले अवसरों की तरह ही विविध और आशाजनक हैं।

Q. आज मनोवैज्ञानिकों के सामने मुख्य चुनौतियाँ क्या हैं?

दैनिक जीवन में मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। मनोवैज्ञानिक विचारों, भावनाओं और व्यवहार जैसे जटिल और विकसित होते कारकों को समझते हैं, जिससे आम जनता को इन पहलुओं के महत्व को बताना मुश्किल हो जाता है।

Q. सीपीबीएस के नवनियुक्त प्रमुख के रूप में, विभाग के लिए आपका क्या दृष्टिकोण है?

मेरा दृष्टिकोण शूलिनी विश्वविद्यालय से शुरू करके उद्योग-संबंधित चुनौतियों से निपटना है। हमारा विभाग छात्रों को परामर्श सहायता प्रदान करने और उनकी मनो-सामाजिक चिंताओं को दूर करने के लिए समर्पित है। हम 10 सितंबर को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर कार्यक्रम आयोजित करने का इरादा रखते हैं, जिसमें आत्महत्या की रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए स्ट्रीट वॉक और नाट्य प्रदर्शन जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। मैं अपने विभाग को समुदाय में एक सक्रिय और सहायक भूमिका निभाते हुए, परिसर से परे अपने प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए देखता हूँ। इसके अलावा, हमारा लक्ष्य न केवल सोलन और हिमाचल प्रदेश में बल्कि पूरे भारत में अपने विभाग की दृश्यता बढ़ाना है। हमारी प्रतिबद्धता में अनुसंधान और वास्तविक दुनिया के मुद्दों को संबोधित करना शामिल होगा ताकि एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव पैदा किया जा सके। इसके अतिरिक्त, हम अपने प्रभाव और आउटरीच को व्यापक बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की मेजबानी करना चाहते हैं।

Q. शूलिनी विश्वविद्यालय में अब तक आपका अनुभव कैसा रहा है?

हालाँकि मैंने अभी तक शूलिनी विश्वविद्यालय में एक पूरा महीना पूरा नहीं किया है, लेकिन मैं यहाँ अपने अनुभव का पूरा आनंद ले रहा हूँ। मैं भविष्य के लिए उत्सुक हूँ और इस प्रतिष्ठित संस्थान में एक संतुष्टिदायक यात्रा के बारे में आशावादी हूँ।

'अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस' का आयोजित

संवाद डेटा

जिला कानूनी प्राधिकरण के सहयोग से, शूलिनी विश्वविद्यालय में कानूनी विज्ञान संकाय का अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया। यह आयोजन, जिसका उद्देश्य समाज में वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों, चुनौतियों और कल्याण के बारे में जागरूकता बढ़ाना था, सहायक प्रोफेसर, श्री विनीत कुमार के एक व्यावहारिक संबोधन के साथ शुरू हुआ। आयोजन के संयोजक विधि विज्ञान संकाय उन्होंने सभा के उद्देश्य को समझाया, एक मार्मिक कहानी साझा करके चिंतनशील स्वर स्थापित किया, जिसमें आज वरिष्ठ नागरिकों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है।
कार्यक्रम का समापन प्रोफेसर (डॉ.) नंदन शर्मा द्वारा वक्ताओं द्वारा साझा किए गए मुख्य बिंदुओं के सारांश के साथ हुआ। उन्होंने वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा में कानूनी और सामाजिक ढांचे के महत्व को दोहराते हुए चर्चा का सार समझाया। प्रोफेसर डॉ. शर्मा ने इस बात पर भी जोर दिया कि वृद्ध लोग किसी भी समाज के लिए एक मूल्यवान संसाधन हैं और उम्र बढ़ना एक प्राकृतिक घटना है।
अवसरों और चुनौतियों के साथ. उन्होंने उल्लेख किया कि 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 104 मिलियन वृद्ध लोग (60+ वर्ष) हैं, जो कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत हैं। बुजुर्गों (60+) में महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है। वरिष्ठजन अकेलेपन,उपेक्षा तथा दीर्घायु में वृद्धि और संयुक्त परिवार का ह्रास और सामाजिक ताने-बाने में टूटन को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार इनका सम्मान करना हमारा दायित्व बनता है।

भारत में खेल मानकों में सुधार के लिए व्यापक प्रयासों की आवश्यकता

स्पीक आऊट

दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश होने के बावजूद, भारत की ओलंपिक भागीदारी बेहद कम है। हमने छात्रों से इस विरोधाभास पर अपनी राय व्यक्त करने और सुधार के लिए अपने विचार साझा करने के लिए कहा। इन्फ्रास्ट्रक्चर और फंडिंग से लेकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण और प्रतिभा पहचान तक, उनके विचार भारत के ओलंपिक संभावनाओं को बढ़ाने के लिए एक पॉइंट देते करते हैं। पेश है **साहिल ठाकुर** के इंटरव्यू के अंश –

भारत की ओलंपिक प्रदर्शन निराशाजनक रही है, उसकी विशाल जनसंख्या और क्षमता होने के बावजूद। खेलों में बुनियादी ढांचे और जमीनी स्तर के विकास में अपर्याप्त निवेश, खराब खेल प्रबंधन, और मजबूत खेल संस्कृति की कमी प्रमुख कारण हैं। एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें बुनियादी ढांचे का पुनर्गठन, प्रशासन का सुव्यवस्थितकरण, विविध खेलों को बढ़ावा देना, जमीनी स्तर के कार्यक्रमों में निवेश करना और एक खेल संस्कृति का पोषण करना शामिल है। सफल राष्ट्रों से सीखकर, भारत अपनी ओलंपिक संभावनाओं को बढ़ा सकता है और एक खेल महाशक्ति के रूप में अपनी क्षमता को पूरा कर सकता है।

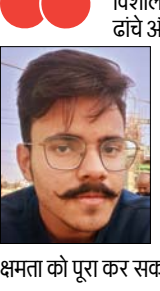

स्तवन शुक्ला, (बीएससी गणित)

भारत में ओलंपिक, खेल सुविधाओं की कमी, सीमित फंडिंग और खेलों के बजाय अकादमिक प्राथमिकता देने वाले दृष्टिकोण है। कई संभावित एथलीटों को ग्रामीण क्षेत्रों में उचित प्रशिक्षण और कोचिंग तक पहुंच नहीं मिलती है। अपर्याप्त प्रतिभा पहचान और विकास प्रणाली भी प्रगति में बाधा डालती हैं। प्रशासनिक रुकावटें इन चुनौतियों को और बढ़ा देती हैं। खेल प्रशासन और प्रतिभा पहचान को सुव्यवस्थित करना भारत को अपनी ओलंपिक प्रतिनिधित्व बढ़ाने और बड़ी सफलता प्राप्त करने में मदद कर सकता है। इन चुनौतियों का समाधान करना भारत के लिए अपनी खेल क्षमता को खोलने और वैश्विक मंच पर उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।

समृति मंता, बीए ऑनर्स, पॉलिटिकल साइंस

भारत की ओलंपिक प्रतिनिधित्व को खेल सुविधाओं की कमी, फंडिंग की कमी और सांस्कृतिक दृष्टिकोण जो अकादमिक प्राथमिकता देते हैं ने सीमित किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण और कोचिंग की कमी होती है, और प्रतिभा पहचान भी अपर्याप्त है। प्रशासनिक रुकावटें भी प्रगति में बाधा डालती हैं। प्रशासन और प्रतिभा पहचान को सुव्यवस्थित करने से भारत अपने ओलंपिक भागीदारी को बढ़ा सकता है और सफलता प्राप्त कर सकता है। इन चुनौतियों का समाधान ढूंढना भारत को वैश्विक स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसा करके, भारत अपने एथलीटों को चमकने और देश को गर्वित करने के अवसर प्रदान कर सकता है।

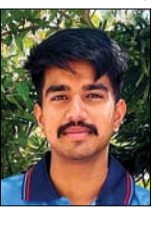

अब्दुल लतीफ, बी .टेक सीएसई (एआई)

भारत ओलंपिक सफलता प्राप्त करने में कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। एक प्रमुख मुद्दा खेल विकास के लिए समर्पित बुनियादी ढांचे और संसाधनों की कमी है। प्रशिक्षण सुविधाएं अक्सर अपर्याप्त होती हैं, और गुणवत्तापूर्ण कोचिंग और स्पोर्ट फिजियोलॉजी तक पहुंच सीमित होती है। इसके अतिरिक्त, अकादमिक पर जोर देने वाली सामाजिक सोच प्रतिभा पहचान और विकास में बाधा डाल सकती है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए बढ़े हुए निवेश, जमीनी स्तर के विकास, और एक खेल संस्कृति को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, जो भारत के ओलंपिक प्रदर्शन को सुधारने के लिए आवश्यक है।

हरमन राणा, बीटेक सीएसई, डेटा साइंसेज

150 करोड़ की जनसंख्या होने के बावजूद, भारत ने ओलंपिक खेलों में अपनी पूरी क्षमता नहीं दिखाई है। इसके पीछे कई कारण हैं : योग्य कोचों की कमी, खेल के बुनियादी ढांचे में सीमित निवेश, अपर्याप्त फंडिंग, युवा प्रतिभा की पहचान में कमी, तीव्र अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा, कम सरकारी समर्थन और अंतत : माता-पिता अपने बच्चों को खेलों में प्रोत्साहित नहीं करते हैं। हाल के वर्षों में इस सुधार के प्रयास हुए हैं, लेकिन प्रगति में समय लगता है। माता-पिता और समाज से अधिक समर्थन संभावित एथलीटों को एक पहचान बनाने में मदद कर सकता है।

ऋतिक राणा, बीएससी बायोटेक्नोलॉजी

भारत की विशाल जनसंख्या और खेल संस्कृति के बावजूद, ओलंपिक सफलता में यह अनुवाद नहीं हुआ है, इसके पीछे विभिन्न कारण हैं। भारत की ओलंपिक भागीदारी को बढ़ाने के लिए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें खेल बजट आवंटन और बुनियादी ढांचे के विकास में वृद्धि शामिल है। निजी क्षेत्र की भागीदारी, प्रायोजकों और खेल अकादमियों के माध्यम से, प्रतिभा खोज कार्यक्रम और स्कूलों और कॉलेजों के साथ सहयोग, सभी को एक दीर्घकालिक दृष्टि और नीतियों द्वारा संचालित किया जाना चाहिए ताकि एथलीटों के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार किया जा सके।

अंजलि, बीटेक, सीएसई, एआई

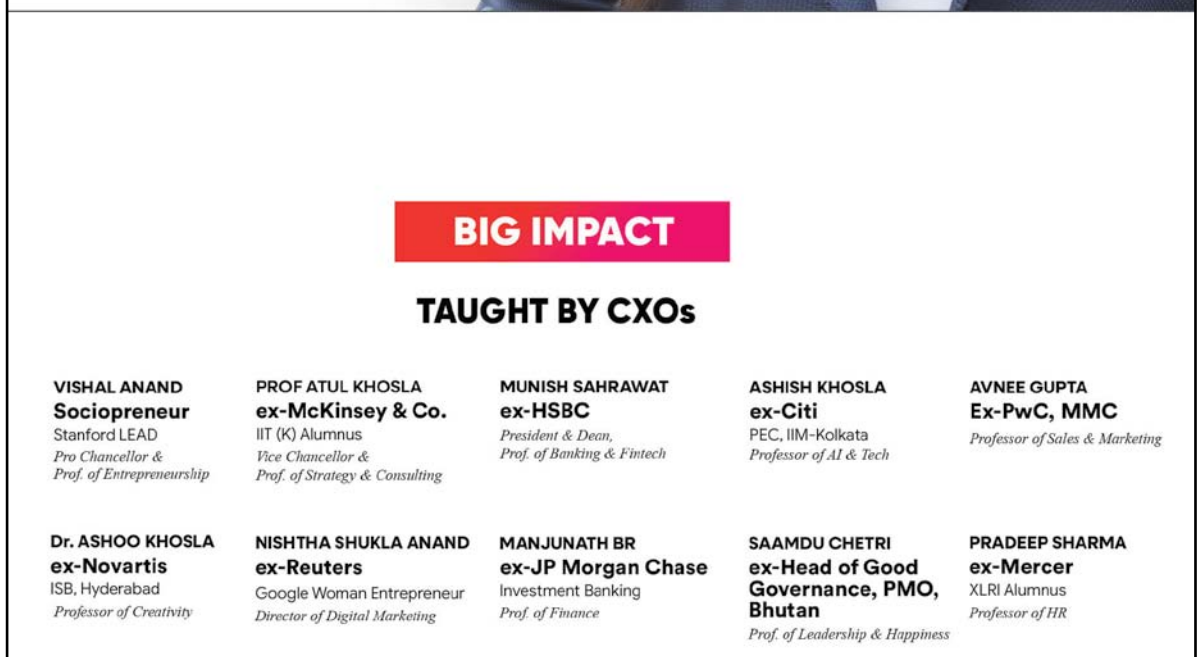

Shoolini University

STUDY AT

NO.1

PRIVATE UNIVERSITY

IN INDIA

Ranked By Both Top Global Rankings

THE World University Rankings 2024

QS WORLD UNIVERSITY RANKINGS 2024

PROF PK KHOSLA
FOUNDER & CHANCELLOR
Post Doc, Oxford University

1 PRIVATE UNIVERSITY IN INDIA — THE World University Rankings 2024

1 PRIVATE UNIVERSITY IN INDIA — QS WORLD UNIVERSITY RANKINGS

73 UNIVERSITY IN INDIA — NIRF INDIA RANKINGS 2023 — nirf — MINISTRY OF EDUCATION

1 UNIVERSITY IN INDIA FOR INTERNATIONAL OUTLOOK — THE World University Rankings 2024

1 UNIVERSITY IN INDIA IN ENGINEERING — THE World University Rankings 2024 | BY SUBJECT

WORLD-CLASS FACULTY

Shoolini boasts faculty from world's Top 1% organizations like **McKinsey, PwC, HSBC, Citi IBM, Microsoft,** and illustrious institutions like **IIT, IIM, ISB, IISc, Oxford, Stanford, Cambridge, UC Berkeley,** and more.

TOP PLACEMENTS

Deloitte. | accenture | KPMG | hp | Nestlé | Mercer | Abbott
BANK OF AMERICA | AMERICAN EXPRESS | Hindustan Unilever Limited | genpact | ICICI Bank | adani | Piramal

ADMISSIONS OPEN 2024

150+ FUTURE-READY PROGRAMS

BTECH CSE
Artificial Intelligence and Machine Learning
in collaboration with IBM
Cloud Computing
in collaboration with AWS
Cyber Security
in collaboration with IBM

COMPUTER SCIENCE
BCA | MCA | MTech | PhD

ENGINEERING
BTech Civil (AI and Geoinformatics)

BIOINFORMATICS
BTech

SUMMIT RESEARCH PROGRAM
BTech | BSc

MBA
Marketing
(Digital Marketing, Brand Management & Retail)
Finance
(FinTech, Venture Capital, BFSI, Financial Derivatives)
Human Resources
Pharma and Healthcare
Business Analytics

JOURNALISM & MASS COMMUNICATION
BAJMC | MA | PhD

DESIGN
B Design | PhD

HOTEL MANAGEMENT
BSc

LAW
BA LLB | LLB | LLM | PhD

BIOTECH / FOOD TECH
BTech | MTech | BSc | MSc | PhD

MICROBIOLOGY
BSc I MSc I PhD

PHARMACEUTICAL SCIENCES
BPharm | MPharm | PhD

NUTRITION & DIETETICS
BSc | MSc

SCIENCES / AGRICULTURE
BSc | MSc | PhD

LIBERAL ARTS
BA | MA | PhD

PSYCHOLOGY
BSc | BA | MA | PhD

SCAN TO APPLY

SHOOLINI UNIVERSITY
Solan-Oachghat-Kumarhatti Highway, Bajhol,
Solan, Himachal Pradesh 173229, India.

701 800 7000
www.shooliniuniversity.com

स्कूल औफ़ जर्नलिज़म एंड न्यू मीडिया, शूलिनी विश्वविद्यालय, कसौली हिल्स, सोलन द्वारा विपिन पब्बी, पूर्व रेजिडेंट एडिटर, द इंडियन एक्सप्रेस के मार्गदर्शन में प्रकाशित। संकाय संपादकः प्रो पार्थ शर्मा।
प्रमुख अनुवादकः डॉ. प्रकाश चंद। छात्र संपादकः स्वर्णिम सुप्रकाश, साक्षी कुमारी। पृथ्वी डिजिटेक प्रा. लिमिटेड, प्लॉट नंबर सी164-165 औद्योगिक क्षेत्र, चरण 8बी, मोहाली - 160071।